International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

कौटिल्य के नगर नियोजन संबंधी विचारों की आधुनिक प्रासंगिकता

शोधार्थी- सारंग चौधरी

सारांश - कौटिल्य (चाणक्य) प्राचीन भारत के एक महान राजनीतिज्ञ चिंतक और दार्शनिक थे। उनकी पुस्तक "अर्थशास्त्र" न केवल राजनीति और अर्थव्यवस्था की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि नगर नियोजन को भी विस्तृत रूप से प्रस्तुत करती है। कौटिल्य के अनुसार नगरों को इस प्रकार बसाया जाना चाहिए कि वे सुरक्षा की दृष्टि से सुदृढ़ हों। नगर के चारों ओर ऊँची दीवारें होनी चाहिए ताकि बाहरी आक्रमणों से रक्षा हो सके। नगर की सड़कें चौड़ी और सुव्यवस्थित होनी चाहिए। मुख्य मार्ग राजमहल से बाजारों और अन्य महत्वपूर्ण स्थानों तक जाते थे। नगर के केंद्र में राजा का महल और अन्य प्रशासनिक भवन बनाए जाने का निर्देश था, जिससे शासक जनता के संपर्क में रह सके। कौटिल्य ने नगर नियोजन में व्यापार को विशेष स्थान दिया। उन्होंने बाजारों को अलग-अलग भागों में बाँटने का सुझाव दिया, जैसे-कृषि उत्पाद, हस्तशिल्प, धातु कार्य, औषधियाँ आदि के लिए अलग-अलग बाजार हों। नगर में कुशल जल निकासी और सफाई व्यवस्था होनी चाहिए ताकि महामारी और गंदगी न फैले। सार्वजनिक कुएँ, तालाब और नहरों की उचित व्यवस्था पर बल दिया गया। नगर के विभिन्न वर्गों के लिए अलग-अलग आवासीय क्षेत्र निर्धारित किए गए। ब्राह्मणों, क्षत्रियों, वैश्यों और शूद्रों के लिए पृथक बस्तियों का उल्लेख अर्थशास्त्र में मिलता है। नगर में सैनिक छावनी, प्रहरी व्यवस्था और गुप्तचरों का मजबूत नेटवर्क होना चाहिए। कौटिल्य द्वारा प्रतिपादित नगर नियोजन न केवल प्राचीन भारत में कुशल प्रशासन का आधार था, बल्कि इसकी आधुनिक प्रासंगिकता भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। आज के स्मार्ट सिटी और सस्टेनेबल अर्बन प्लानिंग की अवधारणाएँ कौटिल्य की नगर नियोजन नीतियों से मेल खाती हैं। आधुनिक शहरों में ट्रैफिक प्रबंधन, स्वच्छता, जल आपूर्ति, और हरित क्षेत्रों के विकास की जो योजना बनाई जाती है, वह उनकी सोच के अनुरूप है। कौटिल्य ने नगरों की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए व्यापार और उद्योगों को बढ़ावा देने पर बल दिया था, जो आज की आर्थिक हब और इंडस्ट्रियल जोन की अवधारणा से मेल खाता है। इसके अलावा, उन्होंने नगरों में अपराध नियंत्रण और प्रशासनिक दक्षता के लिए विशिष्ट नीतियाँ अपनाने की बात कही, जो आज के शहरी शासन और सुरक्षा रणनीतियों के लिए प्रासंगिक हैं। कुल मिलाकर, कौटिल्य की नगर नियोजन नीतियाँ आज भी शहरी विकास और प्रशासन के लिए एक आदर्श मार्गदर्शक बनी हुई हैं।

स्वस्थानस्थितयः सर्वे नित्यं यत्रोपजीविनः ।

सुखं वसन्ति विहिता नगरे तत्तदाश्रयाः ॥"

नगर का उचित नियोजन इस प्रकार किया जाना चाहिए कि वहाँ रहने वाले सभी लोग अपने-अपने कार्यस्थल के निकट रह सकें और सुविधापूर्वक जीवन यापन कर सकें। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वर्णित यह श्लोक नगर नियोजन की महत्ता को दर्शाता है। पौराणिक एवं प्राचीन भारत मे नगरो की संरचना व उनके नियोजन से संबंधित विभिन्न विद्वानो का उल्लेख मिलता है। पौराणिक भारत में भगवान विश्वकर्मा को देव शिल्पी कहा जाता है। जिन्होने द्वारिका आदि नगरियो का निर्माण किया था। वही दैत्य शिल्पी दानव राज मय का नाम आता है जिन्होने हनुमानजी द्वारा जलाई लंका को एक रात में पुनःनिर्माण कर रहने योग्य बनाया। इसी प्रकार ही इन्द्रप्रस्थ के निर्माण के समय पितामह भीष्म और श्रीकृष्ण निर्देर्शित करते रहे।

सिंधु घाटी सभ्यता में हडप्पा मोहजोदडो जैसे बड़े नगर हो अथवा लोथल जैसे बंदरगाह हो ये सभी योजनाबद्ध ढंग से बसाएँ गए थे। आधुनिक विश्व में नगरीय नियोजन से संबंधित एवं विशेष पाठ्यक्रम संचालित किये जाते है जो आधुनिक वास्तुकला का आधार है। यदि हम आधुनिक नगरीय संरचना एवं आचार्य कौटिल्य द्वारा वर्णित नगरीय संरचना की बात करे तो ये लगभग सापेक्ष ही दिखाई देती है।

- ***शोध के उद्देश्य ***

भारत में ही नही संपूर्ण विश्व में नगर नियोजन एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। इस हेतू भारतीय ज्ञान परंपरा को आधार बनाते हुए प्राचीन भारतीय वास्तुकला की आधुनिक प्रासंगिकता का अध्ययन वातावरण एवं परिस्थितियो के आधार पर किया जाना भी उद्देश्य है। साथ ही आचार्य कौटिल्य द्वारा दी गई नगरीय संरचना एवं दुर्गों के निर्माण का अध्ययन भी किया जा रहा है।

- **शोध प्रविधि**

यह शोधपत्र भारतीय ज्ञान परंपरा का अनुशरण करते हुए आचार्य कौटिल्य के विचारों की आधुनिक प्रासंगिकता हेतू पुस्तकालय पद्धति से आगमनात्मक विश्लेषणात्मक विधि द्वारा किया जा रहा है। इसमे कुछ विद्वानों के सुझावों द्वारा प्रारंभिक

तथ्य एवं विभिन्न पुस्तकों एवं शोध प्रबंधो से द्वितीयक तथ्य संकलित किए जाएंगे तत्पश्चात तथ्यो का तार्किक विश्लेषण कर निष्कर्ष एवं सुझाव दिये जायेंगे ।

- **अर्थशास्त्र में वर्णित नगर नियोजन की विशेषताएँ—**

"नगराध्यक्षः सर्वेषां कार्याणां नियन्ता भवेत् ।

सचिवैः सह संयुक्तः सर्व नगरं पालयेत् ॥"

कौटिल्य ने इस श्लोक के द्वारा "नगराध्यक्ष" के पद का वर्णन अपने ग्रंथ "अर्थशास्त्र" के द्वितीय अधिकरण में किया है। विशेष रूप से नगर प्रशासन के विभिन्न आयामो और नगराध्यक्ष के कर्तव्यों से संबंधित विस्तृत विवरण अध्याय 36 में मिलता है।

1. नगर की संरचना और विन्यास

कौटिल्य ने नगर को चार भागों में विभाजित कियाः

- **राजकीय क्षेत्र** - जिसमें राजमहल, प्रशासनिक भवन, राजकीय कोषागार, न्यायालय और गुप्तचर विभाग होते थे।
- **आवासीय क्षेत्र** - नागरिकों के लिए विभिन्न वर्गों के अनुसार आवास निर्मित होते थे। समाज के उच्च वर्ग, व्यापारियों, कारीगरों और मजदूरों के लिए अलग-अलग क्षेत्र निर्धारित थे।
- **व्यापारिक क्षेत्र** -इसमें बाजार, गोदाम, शिल्पकारों के कार्यस्थल, व्यापारिक केंद्र और मंडियां होती थीं।
- **धार्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्र** —इसमें मंदिर, आश्रम, शिक्षण संस्थान, उद्यान, और मनोरंजन स्थल शामिल होते थे।

नगर की गलियाँ चौड़ी, सुव्यवस्थित और पक्की बनाई जाती थीं। जल निकासी और स्वच्छता का विशेष ध्यान रखा जाता था।

"सम्यग्विभक्तवेश्मान्तः सुशोध्यजलमार्गवान्।

सुवर्णवाणिजोपेतः सुरक्षितनगरः स्मृतः ॥"

2. नगर की सुरक्षा व्यवस्था

कौटिल्य ने नगर की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। उन्होंने सुरक्षा के लिए निम्नलिखित व्यवस्थाएँ सुझायी

- नगरप्रवेश द्वारों पर प्रहरी नगर में प्रवेश के लिए निश्चित द्वार होते थे, जहाँ सशस्त्र सैनिक पहरा देते थे।
- गुप्तचर तंत्र - नगर में गुप्तचरों का विस्तृत जाल फैला होता था, जो किसी भी षड्यंत्र या विद्रोह को रोकने के लिए कार्यरत रहते थे।
- नगर रक्षा दीवार और खाई नगर के चारों ओर ऊँची दीवार होती थी और उसके बाहर एक गहरी खाई बनाई जाती थी, जिससे शत्रु आक्रमण न कर सके।
- सैनिक छावनियाँ नगर के अंदर और बाहर सैनिक छावनियाँ होती थीं, जहाँ प्रशिक्षित सैनिक तैनात रहते थे।

"चतुष्पथाः सुस्थिताः स्युर्नगरस्य समन्ततः ।

गुप्तद्वारा भवेद्राष्ट्र सुदृढप्राकारवेष्टितम्॥"

3. आर्थिक व्यवस्था और कर प्रणाली -

कौटिल्य का नगर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होता था। उन्होंने व्यापार और उद्योग को बढ़ावा देने के लिए कई उपाय बताए-

व्यापारिक मंडियां नगर में कई बाजार होते थे, जहाँ स्थानीय और बाहरी व्यापारी व्यापार करते थे। कर प्रणाली - राजस्व प्राप्ति के लिए कर प्रणाली थी, जिसमें व्यापारियों, कारीगरों और किसानों से कर वसूला जाता था।

"वणिज्यस्थापनं तत्र कोष्ठागाराणि निर्मिताः ।

आयव्ययप्रमाणं च तत्पुरं सर्वसिद्धये ॥"

4. जल आपूर्ति और स्वच्छता

कौटिल्य ने नगर में जल आपूर्ति और स्वच्छता की भी विशेष व्यवस्था की थी-

- तालाब और कुएँ - प्रत्येक नगर में पर्याप्त जलाशय, तालाब और कुएँ बनाए जाते थे, जिससे नागरिकों को स्वच्छ जल प्राप्त हो सके।
- नदियों और नहरों का उपयोग नगर के पास बहने वाली नदियों से जल आपूर्ति की जाती थी और
- सिंचाई के लिए नहरों का निर्माण किया जाता था।
- सड़क और गलियों की सफाई नगर में नियमित रूप से सड़कें और गलियाँ साफ की जाती थीं।
- कूड़ा निस्तारण - नगर में कूड़ा-कचरा फेंकने के लिए निश्चित स्थान होते थे और निस्तारण की उचित व्यवस्था होती थी।

"उद्यानवाप्यः पुष्करिण्यः कूपतड़ागसंयुतः ।

एवं सुसज्जितं ग्राम नगरे स्थापयेद् बुधः ॥"

5. सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना

कौटिल्य ने नगर को केवल आर्थिक और प्रशासनिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से भी उन्नत बनाने पर जोर दिया।

- शिक्षा और विद्या - नगर में गुरुकुल, विद्यालय और पुस्तकालय होते थे, जहाँ विद्यार्थियों को वेद, शास्त्र, गणित, युद्धकला, और प्रशासनिक ज्ञान दिया जाता था।

- धार्मिक स्थल -नगर में मंदिर, आश्रम और यज्ञशालाएँ होती थीं, जहाँ धार्मिक अनुष्ठान और प्रवचन आयोजित किए जाते थे।
- मनोरंजन और कला- नाट्यशाला, रंगमंच और उद्यान बनाए जाते थे, जहाँ लोग संगीत, नृत्य और अन्य कलाओं का आनंद लेते थे।

6. आपदा प्रबंधन और जनकल्याण

अन्न भंडारण नगर में अनाज भंडारण के लिए बड़े गोदाम बनाए जाते थे, जिससे अकाल के समय भोजन की कमी न हो।

7. पर्यावरण संरक्षण

कौटिल्य ने नगर में पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए कई नियम बनाए-

- **वन संरक्षण** - नगर के आसपास वनों की सुरक्षा सुनिश्चित की जाती थी।
- **वृक्षारोपण** - नगर में सड़क किनारे और सार्वजनिक स्थानों पर पेड़ लगाए जाते थे।

कौटिल्य के नगर नियोजन की आधुनिक नगरीय नियोजन से तुलना

कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में नगर नियोजन के जो सिद्धांत दिए थे आधुनिक नगर नियोजन भी लगभग उसी प्रकार के समान सिद्धांतों पर आधारित है।

1. **नगर की संरचना और नियोजन**

कौटिल्य का दृष्टिकोण:

- नगर को विभिन्न क्षेत्रों में विभाजित किया जाना चाहिए, जैसे आवासीय, व्यापारिक, प्रशासनिक, एवं सैन्य क्षेत्र।
- सुरक्षा के लिए नगर के चारों ओर मजबूत किलेबंदी होनी चाहिए।

आधुनिक नगर नियोजन:

- आधुनिक नगरों को क्षेत्रीय विभाजन के आधार पर बसाया जाता है औद्योगिक, आवासीय, वाणिज्यिक, शैक्षणिक, एवं मनोरंजन क्षेत्र अलग-अलग होते हैं।

- सुरक्षा के लिए किलों के बजाय आधुनिक पुलिस प्रणाली, सीसीटीवी कैमरे, और डिज़ास्टर मैनेजमेंट सिस्टम का उपयोग किया जाता है।
- स्मार्ट सिटी योजना के तहत सड़कें चौड़ी, सुव्यवस्थित और यातायात नियंत्रण प्रणाली से युक्त होती हैं।

2. जल आपूर्ति एवं स्वच्छता

कौटिल्य का दृष्टिकोण:

नगर में कूप (कुएँ), वापी (तालाब), तड़ाग (झील) एवं नदी के जल स्रोतों की व्यवस्था होनी चाहिए।

- जल निकासी के लिए नालियों का निर्माण आवश्यक बताया गया।
- नगर की स्वच्छता के लिए अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली होनी चाहिए।

आधुनिक नगर नियोजन:

- प्रत्येक नगर में जल आपूर्ति के लिए जल शोधन संयंत्र होते हैं।
- सीवेज सिस्टम और वेस्ट मैनेजमेंट प्लांट के माध्यम से गंदे पानी और ठोस कचरे का निपटान किया जाता है।
- वर्षा जल संचयन जैसी आधुनिक तकनीकों का उपयोग किया जाता है।

3. आर्थिक एवं व्यापारिक नियोजन

कौटिल्य का दृष्टिकोण:

- नगर में व्यापारिक गतिविधियों के लिए मुख्य बाजार एवं वाणिज्यिक क्षेत्र निर्धारित किए जाने चाहिए।
- नगराध्यक्ष एवं शुल्काध्यक्ष व्यापार एवं कर संग्रह की देखरेख करते थे।
- व्यापार की सुरक्षा एवं सुगमता के लिए चौड़ी सड़कें एवं गोदामों की व्यवस्था होनी चाहिए।

आधुनिक नगर नियोजन:

- व्यापारिक गतिविधियों के लिए स्मार्ट मार्केट, स्पेशल इकोनॉमिक ज़ोन एवं इंडस्ट्रियल हब बनाए जाते हैं।
- डिजिटल टेक्नोलॉजी और बैंकिंग प्रणाली के माध्यम से कर संग्रह और आर्थिक नियोजन किया जाता है।
- लॉजिस्टिक्स हब एवं हाईवे कनेक्टिविटी व्यापार को आसान बनाते हैं।

4. सुरक्षा एवं प्रशासन

कौटिल्य का दृष्टिकोण:

- नगर के चारों ओर प्राचीर और किलेबंदी होनी चाहिए।
- नगर में रात्रि प्रहरी और गुप्तचर नियुक्त किए जाने चाहिए।
- नगराध्यक्ष और सैनिकाध्यक्ष मिलकर सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करें।
- **आधुनिक नगर नियोजन**:
- पुलिस प्रशासन, डिजिटल सर्विलांस सिस्टम और ड्रोन टेक्नोलॉजी का उपयोग किया जाता है।
- स्मार्ट सिटी परियोजनाओं में फायर स्टेशनों, पुलिस चौकियों को अनिवार्य किया गया है।

5. पर्यावरणीय एवं हरित क्षेत्र नियोजन

कौटिल्य का दृष्टिकोण:

- नगर में पर्याप्त उद्यान एवं वृक्षारोपण होना चाहिये ताकि ताजी हवा एवं पर्यावरण संतुलन बना रहे।

आधुनिक नगर नियोजन:

- शहरी नियोजन में ग्रीन पार्क, बायोडायवर्सिटी पार्क, और सस्टेनेबल सिटी प्रोजेक्ट बनाए जाते हैं।
- **निष्कर्ष** –

कौटिल्य का नगर नियोजन सुरक्षा, प्रशासनिक दक्षता, आर्थिक समृद्धि और सामाजिक व्यवस्था पर आधारित था। आधुनिक नगर नियोजन में तकनीकी नवाचार, परिवहन सुविधा, पर्यावरण संरक्षण और जनसंख्या प्रबंधन को अधिक प्राथमिकता दी जाती है। हालाँकि, आज भी स्मार्ट सिटी और सस्टेनेबल प्लानिंग में कई पारंपरिक सिद्धांतों का उपयोग किया जा रहा है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि कौटिल्य के विचार समय से परे थे।

➢ **संदर्भ ग्रंथ सूची -**

1)Rangarajan L.N(.1992) Kautilya: The Arthashastra Penguin Books India

2)Shukla D.N.(1993) Hindu Science of Town Planning and Architecture (Vastu- Shastra) Munshiram Manoharlal Publishers
3) Acharya Chanakya (2013) Taxshila publications